PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 फरवरी 2011 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब ✿ बानी

वर्ष - आठवां | अंक-दसवां | फरवरी-2011 | मासिक पत्रिका

4

सतगुरु सोहणा मेरा है

(एक शब्द)

5

मेरे जीवन का संदेश

(परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से)

7

परमात्मा से मिलाप

(कबीर साहब की बानी)
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

25

सवाल-जवाब

(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब)
11 आर.बी. आश्रम राजस्थान

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाया। **प्रकाशित करने का स्थान** : 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर - 335 001 (राजस्थान)
फोन - 0 99 50 55 66 71 - राजस्थान व 0 98 71 50 19 99 - दिल्ली

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया **फोन** : 99 28 92 53 04 व 96 67 23 33 04

उप सम्पादिका : नंदिनी

सहयोग : रेनू सचदेवा, ज्योति सरदाना, मास्टर प्रताप सिंह व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 107 | Website : www.ajaibbani.org

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतगुरु सोहणा मेरा है कृपाल नी सईयो

सतगुरु सोहणा, मेरा है कृपाल नी सईयो,
दीन दयाल नी सईयो (2)

1. कई जन्मां तों विछड़ी सी मैं, लब्भदी प्रीतम प्यारा,
सतगुरु पूरा मिल जाए मैंनू, हो जाऐ पार उतारा, (2)
नीं मिल गया माहीं, मेरा नीं शहनशाही मेरा
करे संभाल नीं सईयो, दीन दयाल नीं सईयो,
सतगुरु सोहणा .....

2. सईयो नीं मैं दर-दर फिर के, डाडी पागल होई,
दिल दा जानी कोई ना मिलया, ना सुणी अरजोई, (2)
नीं मिल गया प्यारा, मेरा नीं दिली सहारा मेरा
शब्द भंडार नीं सईयो, दीन दयाल नीं सईयो,
सतगुरु सोहणा .....

3. जल धारे और धूणे तपके, थां-थां तीर्थ न्हाया,
शिवदवाले ते मंदिर पूजे, किसे ना दुःख वंडाया, (2)
नीं मेरा माही , आया नीं मैंनू रस्ते, पाया
दवे दीदार नीं सईयो, दीन दयाल नीं सईयो,
सतगुरु सोहणा .....

4. सोहणा दर्श दिखाओ सब नूं, सुण कृपाल प्यारे,
ऐबां भरी 'अजायब' दी जिंदड़ी लावो पार किनारे, (2)
नीं सच्चा सन्त, आया नीं मेरा कंत, आया
करे प्यार नीं सईयो, दीन दयाल नीं सईयो,
सतगुरु सोहणा .....

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

मेरे जीवन का संदेश

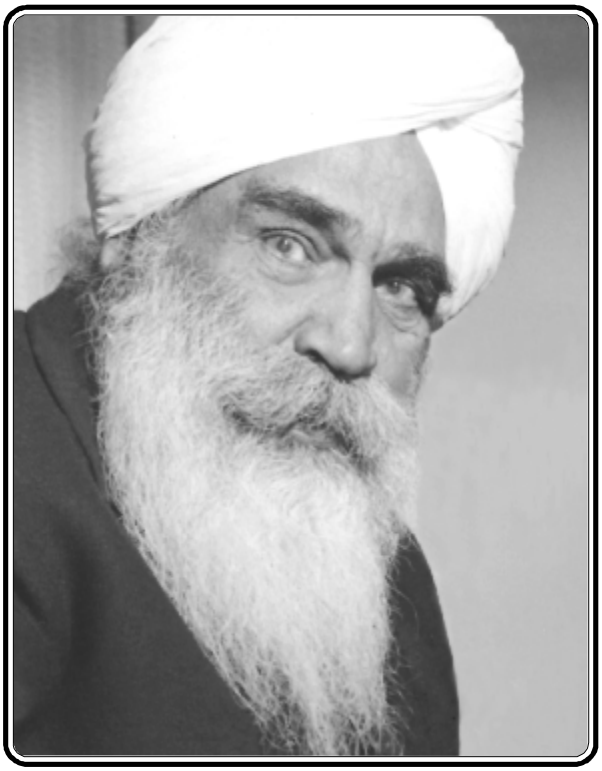

इंसानी जामा सम्पूर्ण सृष्टि में सबसे ऊँची सीढ़ी है, यह सौभाग्य से प्राप्त होता है। आपको इसांनी जामा प्रभु प्राप्ति और रूहानी परिपूर्णता के लिए प्रदान किया गया है। यह जामा उस पूर्ण चेतन सत्ता का शानदार अनुभव प्राप्त करने के लिए परिश्रम करने का उत्तम अवसर है; यह अवसर उस महान उद्देश्य को उपयोग में लाने के लिए होना चाहिए।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मनुष्य जीवन के इस महान उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए विभिन्न प्रकार के धर्म और मत–मतान्तर विकसित किए गए हैं। यह सभी धर्मों का समान आधार है। आपको आपके अंदर बैठी हुई प्रभुसत्ता से अनुभव देकर जोड़ दिया गया है आपको उस मार्ग पर डाल दिया गया है अब आपको नियमित अभ्यास द्वारा इसे दिन–प्रतिदिन विकसित करना है।

इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आपको अच्छा जीवन बिताते हुए अपने चरित्र को शुद्ध रखना हैं। अपने जीवन की गतिविधियों में सच्चाई, शुद्धता, प्यार, निस्वार्थता और उचित गुणों को उत्पन्न करना है। हमने नफरत को छोड़ना है अहंकार और क्रोध को दूर भगाना है, हिंसा का परित्याग करना है।

अपने अंदर प्यार, वफादारी, दीनता, क्षमा और अहिंसा को धारण करने की प्रतिज्ञा करनी है। युद्ध और ताकत की भूख का परित्याग करके अपने हृदय में कृपा, दया और विश्वव्यापी प्यार भरें। अपने अंदर वह प्यार भरें जो देशों व जातियों में जगमगाए। आपके जीवन में सच्चे धर्म का अनुशासन हो।

परमात्मा से प्यार करें, सबसे प्यार करें, सबकी सेवा करें, सबके लिए आदर भाव रखें क्योंकि प्रत्येक इंसान में परमात्मा समाया हुआ है। एकता का संदेश फैलाएं और एकता का जीवन यापन करें। धरती पर शक्ति होगी यही मेरे **जीवन का सन्देश** है; मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह पूर्ण होगी।

सबको बहुत–बहुत प्यार।

कृपाल सिंह

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा से मिलाप

कबीर साहब की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

परम पिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारी आत्मा पर रहम किया। सन्त गरीब नवाज़ होते हैं। हम अपने बर्तन के मुताबिक ही उनसे दया प्राप्त करते हैं। महाराज सावन सिंह जी ने 45 साल तक अपने दोनों हाथों से दया की दात बाँटी और होका देकर कहा, ''आप मुझे बेगाना न समझें, मैं आपका अपना हूँ।''

इतनी बड़ी दुनियां में से गिनती के जीवों ने ही महाराज सावन सिंह जी से फायदा उठाया। इसी तरह परमात्मा कृपाल ने भी खुले दिल से 'नाम' की दौलत बाँटी। आप सदा ही कहते रहे, ''मैं अपने पिता का फिजूल खर्च करने वाला बेटा हूँ, सवाल तो लेने वाले का है?''

प्यारेयो! हमने अपने बर्तन के मुताबिक ही उनसे प्राप्त किया। आप सदा ही कहा करते थे, ''जब भी गुरु के पास जाएं मिट्टी की तरह बनकर जाएं।'' मिट्टी का अपना कोई स्वरूप नहीं होता। कुम्हार मिट्टी को डंडो से कूटता है फिर पानी डालकर उस मिट्टी को गूँथता है। चक्क पर चढ़ाकर उसके अंदर अपना हाथ रखता है; डोर से काटकर घड़ा बनाकर उसे आग में रख देता है। घड़ा देखने में सुंदर होता है उसका पानी ठंडा होता है पानी पीने वाले उस घड़े की कद्र करते हैं।

परमात्मा सन्तों को दया देकर भेजता है। सन्त **परमात्मा से मिलाप** करवाने के लिए आते हैं अगर हम खाली घड़ा लेकर सन्तों के पास जाते हैं वे उसे भरने के लिए तैयार हैं अगर हमारा घड़ा पहले से

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ही भरा हुआ है तो उसमें वस्तु कैसे डाली जाएगी? हम सन्तों के पास अपनी ख्वाहिशें लेकर जाते हैं। आप सोचकर देखें! क्या हम सन्तों के पास मिट्टी की तरह जाते हैं अगर हमें मामूली सा भी दर्द हो जाए तो हम भजन छोड़कर बैठ जाते हैं। गुरु परमात्मा में हजारों नुख्स निकालते हैं कहते हैं, ''मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ?''

महाराज सावन सिंह जी और सभी वेद–शास्त्र इस बात की गवाही देते हैं कि हमारा जीवन शुरू होने से पहले माता के पेट में आने के समय ही सुख–दुख, बीमारी–तंदुरूस्ती, गरीबी–अमीरी तय हो जाती है। हमें ये सब भोगना ही पड़ता है चाहे हम इसे हँसकर भोगें या रोकर भोगें! ज़िंदगी में फायदा, नुकसान, बीमारी, तंदुरूस्ती जैसी घटनाएं वक्त आने पर घटती रहती हैं।

अगर हम अंदर जाते हैं तो ऐसी घटनाओं का पता लगाना कोई खास मुश्किल नहीं होता लेकिन हम अंदर नहीं जाते बाहर बैठे हैं। हमें यह ज्ञान नहीं कि यह घटना क्यों घटी, यह मेरे किस कर्म का ईनाम है कि मैं सुख भोग रहा हूँ? अगर दुख भोग रहा हूँ तो किन पापों का बदला चुका रहा हूँ?

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे संसार में आकर यही होका देते हैं कि आपको इंसान का जामा मिला है। यह जामा बहुत अमूल्य है। परमात्मा ने आपको यह जामा विषय–विकार भोगने के लिए नहीं दिया। भोग तो हर योनि भोगती है। जानवर, पक्षी, रेंगने वाले कीड़े भी भोग भोगते हैं सुख–दुख, गर्मी–सर्दी महसूस करते हैं अगर हम इंसान बनकर भी जानवरों वाले कर्म करते हैं तो हमें इसकी भारी सजा भुगतनी पड़ती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

लख चौरासी जून उपाई, मानस को प्रभ दी वडयाई,
इस पौड़ी ते जो नर चूके, सो आए जाए दुख पायेन्दा।

आप कहते हैं कि चौरासी लाख योनियाँ भुगतने के बाद इंसान को **परमात्मा से मिलाप** करने का मौका मिलता है, यह सीढ़ी का आखिरी स्टैप है अगर हम संभलकर कदम उठाते हैं तो मकान की छत (सच्चखंड) पर पहुँच जाते हैं अगर हमारा पैर फिसल जाता है तो हम जमीन पर गिर जाते हैं चौरासी लाख योनियों में चले जाते हैं फिर पता नहीं परमात्मा यह मौका दे या न दे! कबीर साहब कहते हैं:

मानस जन्म दुर्लभ है, होत न बारंबार,
ज्यों वन फल पके भुएं गिरे, बोहर न लागे डार।

एक बार फल पककर डाली से नीचे गिर जाए तो वह वापिस डाली पर नहीं लगता। इसी तरह एक बार इंसानी जामा हाथ से निकल जाए फिर **परमात्मा से मिलाप** करने का मौका मिलना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। सन्त–महात्मा प्यार से कहते हैं:

जो कुछ करना सो अब ही करना, अग्गे दा न भरोसा धरना।

हमने इसी जीवन में परमात्मा की भक्ति करनी है। जो लोग यह सोचते हैं फिर भक्ति कर लेंगे। उनके लिए सन्त कहते हैं अगर आप आज का काम कल पर छोड़ेंगे तो क्या पता कल क्या होगा? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मता करे पश्चिम की ताईं, पूर्व ही ले जात।

हम तो प्लानिंगें ही बनाते हैं, नहीं जानते कि परमात्मा ने हमारे लिए क्या प्लानिंगें बनाई हुई हैं? हम जब परमात्मा को पुकारते हैं वह

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जरूर आता है, वह रहम का समुन्द्र है। कबीर साहब हमें उदाहरणें देकर समझाते हैं कि जानवर भी अपने कुल की रीति का पालन करते हैं कि कहीं हमारी कुल को दाग न लग जाए! बड़े सिर को बड़ी दर्द होती हैं। गाँव के मुखिया की ज्यादा जिम्मेवारियाँ होती हैं।

परमात्मा ने इंसान को सब योनियों का सरदार बनाकर भेजा है। हमने परमात्मा की भक्ति करके **परमात्मा से मिलाप** करना है। सन्त–महात्मा हमें परमात्मा की याद दिलाने के लिए ही संसार में आते हैं। कोई भी माँ के पेट से चोर, शराबी, नशेड़ी या अपराधी पैदा नहीं होता। हम अपने आपको नशे या बुरी आदतों के रोग लगा लेते हैं; यह सब सोहबत का ही असर है।

महात्मा हमें समझाते हैं कि हम जैसी संगत करते हैं हम पर उसका वैसा ही असर पड़ता है अगर हम चोरों की संगत करते हैं तो हमें चोरी करने की आदत पड़ जाती है। जुएबाजों की संगत करते हैं तो जुआ खेलने की आदत पड़ जाती है। शराबियों की संगत करते हैं तो शराब पीने की आदत पड़ जाती है।

लुकमान पैगम्बर बहुत समझदार थे। उनका बेटा एक ऐसे लड़के की संगत करने लगा जिसमें बहुत बुराईयां थी। लुकमान पैगम्बर ने अपने लड़के को उस लड़के से मिलने के लिए मना किया तो उनके लड़के ने कहा, ''पिता जी! मैं बहुत समझदार हूँ। मैं उसके साथ बातें तो जरूर करता हूँ लेकिन अपने ऊपर उसका रंग नहीं चढ़ने दूँगा।'' पैगम्बर साहब ने सोचा अगर मैंने इसके साथ जबरदस्ती की तो यह विद्रोह करेगा। पैगम्बर साहब ने एक कोयला लेकर अपने लड़के से कहा, ''बेटा! तू यह कोयला अपने हाथ में पकड़ ले लेकिन तेरा हाथ

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

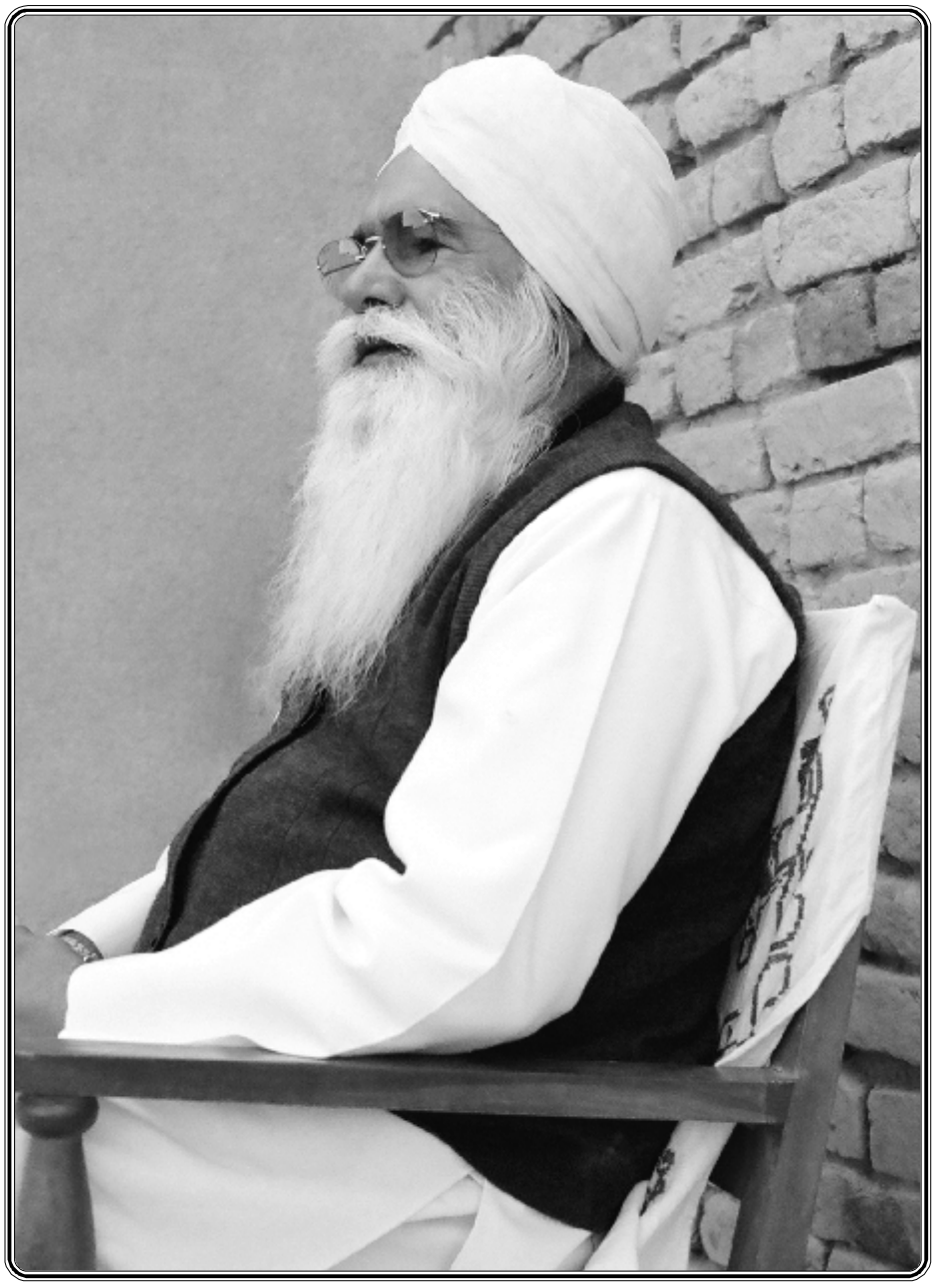

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

काला नहीं होना चाहिए।'' लड़के ने कहा, ''पिता जी! ऐसा कैसे हो सकता है कि कोयला हाथ में पकड़ने से मेरा हाथ काला न हो?'' पैगम्बर साहब ने कहा, ''तू यह कैसे कह सकता है कि बुरी संगत करके तेरे ऊपर बुरा असर नहीं पड़ेगा।'' फरीद साहब कहते हैं:

लोड़े दाख बेजूरिया, कीकर बीजे जट,
हंडा ऊन कताएंदा, पेंदा लोड़े पट।

अगर कोई यह चाहे कि मैं कीकर बीजकर काबुल या बिजोर के मेवे खा लूँगा! यह कैसे हो सकता है? प्यारेयो! कीकर बीजकर तो हमें काँटे ही मिलेंगे। हमने मालिक के प्यारो की संगत करनी है। हमारे ऊपर भी उनकी भक्ति, प्यार का रंग चढ़ जाए और हम **परमात्मा से मिलाप** कर सकें। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सच्ची बैठक तिन्हां संग, जिन संग जपिए नाओ,
तिन संग संग न कीचे, नानक जिन्हा अपणा साओ।

मालिक के प्यारों की संगत सच्ची है। उनकी संगत में हम 'नाम–शब्द' की कमाई करते हैं। उनकी संगत को परमात्मा अपने लेखे में लगाता है। आप अहंकार और भोगों में फँसे हुए लोगों की संगत से दूर रहें। कबीर साहब कहते है:

साकत संग न कीजिए दूरो जाईए भाग,
वासन कारो परसिए तो कुछ लागे दाग।
साकत ऐसा है, जैसी लहसुन की कान,
कोने बहकर खाईए, प्रकट भए नादान।

साकत का दिल विषय–विकारों के कारण काले कंबल की तरह दागी होता है। वे परमात्मा का नाम जपने वालों का मजाक उड़ाते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आप कहते हैं, ''ऐसों की संगत न करें, वहाँ से भाग जाएं अगर उनकी महक भी आ गई तो वे आपको भक्ति से दूर ले जाएंगे जैसे लहसुन की वासना छिप नहीं सकती।''

जब शिष्य अपने फैले हुए ख्यालों को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाकर 'शब्द' की आवाज को सुनता है तब उसे अपनी कमजोरियों और सतगुरु की दया का पता लगता है कि सतगुरु क्या ताकत है, सतगुरु का परमात्मा के साथ क्या रिश्ता है?

शिष्य परमात्मा से प्रार्थना करता है कि मैं दुनियां से छिपकर पाप करता हूँ, दुनियां को बड़ा और तुझे छोटा समझता हूँ। काम ने मेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है, मन ने मुझे पागल कर दिया है। तू मेरा लेखा लेने से पहले ही मुझे बख्श दे अगर तूने मेरा लेखा लिया तो मैं कैसे छूट सकता हूँ? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

लेखा करत ना छूटिए, खिन्न खिन्न भूलनहार,
बख्शनहारा बख्श ले, नानक पार उतार।

महाराज सावन सिंह जी दुखी दिल से कहा करते थे, ''सतगुरु किसी का इम्तिहान न ले। हम जीव किसी तरह भी पास नहीं हो सकते। यह उनकी दया है कि वे हम शराबी, कबाबी, भूले भटके पत्थर दिलवालों को मोम बनाते हैं; हम पर प्यार बरसाते हैं।''

सन्तों को किसी के प्यार की जरूरत नहीं होती वे तो खुद अपने गुरु के प्यार में मस्त होते हैं। गुरु पहले शिष्य बनता है। सन्तों ने अपनी बानियों में अपनी जिंदगी के हिस्से को बयान किया होता है। वे चकोर की तरह अपना ध्यान अपने गुरु की तरफ लगाते हैं। सोते–जागते गुरु गुरु ही करते हैं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

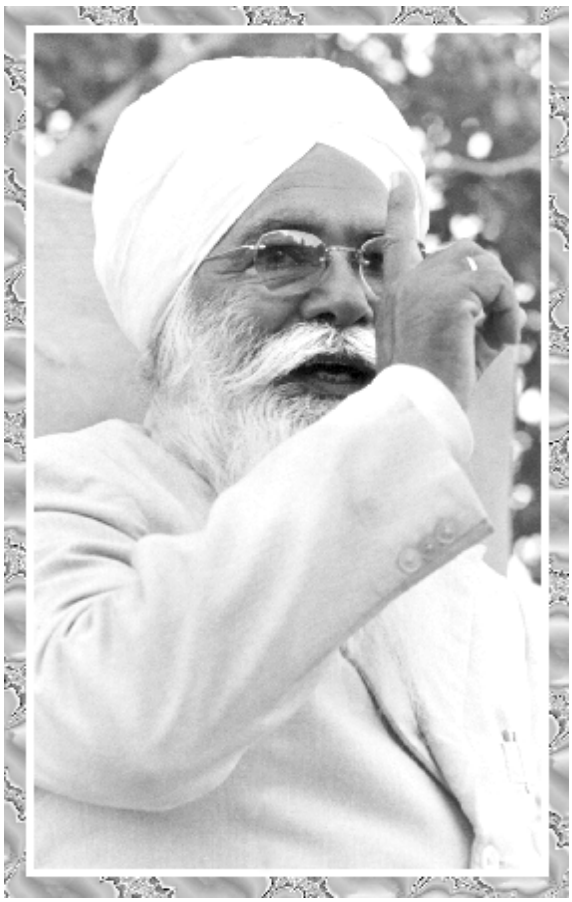

हमारा गुरु 'नामदान' देकर शब्द रूप में हमारे अंदर बैठा है। खाना खाते समय हमारा ख्याल कहीं और होता है अगर हम खाना खाते समय अपने ध्यान को दोनों आँखों के बीच लाकर अपने गुरु को भोग लगवाएं! आप जो भी निवाला खाते हैं सोचें! गुरु को खिला रहे हैं। पानी पीते समय भी यही सोचें! हम अपने गुरु को पानी पिला रहे हैं। हाथ धोते समय भी यही सोचें! हम अपने गुरु के हाथ धुलवा रहे हैं। नहाते हुए भी यही सोचें! हम अपने गुरु को नहला रहे हैं। आप एक हफ्ता ऐसा करके देखें! आपकी काया ही पलट जाएगी। गुरु रूप परमात्मा हमारे अंदर ही बैठा है।

खाना बनाते समय लड़कियाँ अपने ख्याल को नेक–पाक रखें सिमरन करें और दुनियां के ख्यालों को मन में न लाएं तो उनके हाथ से बना हुआ खाना खाने वालों की बुद्धि अच्छी हो जाती है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

राम झरोखे बैठकर सबका झारा ले, जाँकी जैसी चाकरी ताँको तैसा दे।

मुझे एक बार जगन्नाथ जाने का मौका मिला। मैं वहाँ कई मठों में गया। कबीर साहब के मठ में पांजी बाँटी जा रही थी। वहाँ एक माता कह रही थी कि कबीर साहब ने पाखंड की भक्ति को दूर करके 'नाम' की पांजी बाँटी थी। मैंने वहाँ से भोग लिया इसी तरह बाबा मलूकदास के मठ में एक बुजुर्ग रोज टुकड़े बाँटते हुए कहता:

अजगर करे न चाकरी, पक्षी करे न काम,
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।

हमने तो सहजयोग और प्यार को लेना है। मैंने वहाँ से अपने हिस्से का प्रशाद बड़ी श्रद्धा से लिया। इसी तरह वहाँ कृष्ण की भक्तनी कर्माबाई का भी मठ है। वहाँ खिचड़ी का भोग लगवाया जाता है। कर्माबाई कृष्ण को बाल गोपाल समझकर उसके लिए खिचड़ी तैयार करती, बच्चे खिचड़ी खाकर बहुत खुश होते हैं। वह सच्चे दिल से खिचड़ी बनाकर मूर्ति के आगे रख देती और बहुत खुश होती।

एक दिन कर्माबाई अपनी बिरादरी में शादी के कार्यक्रम में गई। वहाँ जाकर वह अपना नित्य–नियम भूल गई। जब उसकी नींद खुली तो वह रोने लगी कि आज मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया है, मेरा बच्चा भूखा होगा। वह इसी लहजे में भागी आई जब उसने दरवाजा खोलकर देखा तो वहाँ एक बालक खिचड़ी बना रहा था। उसने कहा, ''बेटा! आज तू भूखा रह गया होगा? मैं रोज का नित्य–नियम भूल गई तेरे लिए खिचड़ी नहीं बना सकी।'' बालक ने कहा, ''माता! तू रोज मेरे लिए खिचड़ी बनाती थी, आज मैंने बना ली है; तू मेरे साथ बैठकर खिचड़ी खा।'' यही प्यार है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अगर सेवक के अंदर सच्चा प्यार है, उसका ध्यान पक गया है और ख्याल दोनों भरवटों के बीच जुड़ा हुआ है तो वह ध्यान में इतना मग्न हो जाता है कि उसे पता ही नहीं चलता कि गुरु मेरे अंदर प्रकट हो गया है मेरे साथ बातचीत कर रहा है। हमें गुरु पर ऐतबार नहीं इसलिए हम कहते हैं, ''हमारा पर्दा खोलें।''

मैंने कई प्रेमियों को महाराज सावन के आगे विनती करते हुए देखा है। वे कहते, ''महाराज जी! हमारा पर्दा खोलें।'' महाराज जी कहते, ''क्यों भई! भजन करता है, कितना भजन करता है?'' वे लोग चुप हो जाते। भजन करने वालों को यह कहने की जरूरत ही नहीं पड़ती क्योंकि गुरु तो अंदर ही बैठा है।

मुझे हुक्म मानने का गुण आर्मी से मिला। मैं बचपन में ही आर्मी में चला गया था। आर्मी का यह कानून है कि आपको जो हुक्म मिले आप पहले उसे पूरा करें अगर आपको खाना बनाने के लिए कहा जाए तो आप पहले खाना बनाएं। खाना बनाने के लिए लकड़ियाँ, आटा कहाँ से आएंगे यह सवाल बाद में करें।

जब मैं अपने गुरु के चरणों में आया तो मैंने सोचा कि आर्मी में दुनियावी बंदों के हुक्मों का इतना पालन किया है अगर अफसर अटेंशन खड़े रहने का हुक्म दे दे तो जवान अपने ऊपर से मक्खी भी नहीं उड़ा सकता अगर उस समय जवान के ऊपर साँप भी चढ़ जाए तो वह उसे भी नहीं हटा सकता। हम एक इंसान का इतना हुक्म मानते हैं! इस मुकाबले में हमें गुरु का कितना हुक्म मानना चाहिए? यही कारण था कि मैं अपने गुरुदेव की दया से आपकी आज्ञा का पालन कर सका।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मुझे अपने गुरुदेव से यह कहने की जरूरत ही नहीं पड़ी कि आप मेरा पर्दा खोलें! यह उनका ही काम है अगर हम अपने आपमें एकाग्र हैं हमारे अंदर इस तरह का प्यार है तो हमें पता ही नहीं चलता कि गुरु हमारे अंदर प्रकट हो गया है।

मैं सदा ही कहा करता हूँ, ''जब हमें सन्त–सतगुरु मिल जाएं तो हमें उनके साथ सच्चे दिल से प्यार करना चाहिए। दुनियां के प्यार को कम करें, दुनियां का मोह छोड़ें; अपनी आत्मा को अंदर एकाग्र करके बिना किसी झिझक के अंदर जाएं। सतगुरु अंदर सुरत को शब्द के साथ जोड़ता है। हमारी आत्मा को जिस चीज़ की भूख–प्यास है वह अंदर ही मिल जाती है।'' कबीर साहब का शब्द सुनें आप हमें प्यार से उदाहरणें देकर समझा रहे हैं:

जो कोइ येहि बिधि प्रीति लगावै, जो कोइ येहि बिधि प्रीति लगावै।।
गुरु का नाम ध्यान ना छूटे, परगट ना गोहरावै।।

कबीर साहब कहते हैं जिसकी आँखों में चौबीस घंटे गुरु की मनमोहनी मूरत समाई हुई है और जुबान पर सिमरन है; इस तरह की प्रीत करने वाले के लिए गुरु नानक साहब कहते हैं:

गुरु की मूरत मन में ध्यान, गुरु का शब्द मंत्र मन मान।

गुरु की मूरत का भाव स्वरूप से है। गुरु आपको जो मंत्र देते हैं आप उस मंत्र का जाप करें। शुरू में आदत डालनी पड़ती है क्योंकि हमें सिमरन करने की आदत नहीं कल्पना करने की आदत है। कल्पना ऐसे उठती है जैसे हम यहाँ सतसंग में बैठे हैं लेकिन मन कोई न कोई कल्पना करता ही रहता है; किसी भाग्य वाले का ही मन टिका होता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हम घर–बार और कारोबार छोड़कर यहाँ सतसंग में आए हैं लेकिन कल्पनाएं फिर भी हमारा पीछा नहीं छोड़ती। हम दिन–रात दुनियां का सिमरन करने में लगे हुए हैं। पानी की कमी की वजह से सूखी खेती पानी से ही हरी हो सकती है। जब हमारा ध्यान पक जाता है तो मन की जुबान से सिमरन होना शुरू हो जाता है।

हमें मालूम है कि जज अपने काम का सिमरन करता है कि मुझे कल कौन से मुकद्मों का फैसला करना है? क्लर्क अपने काम का सिमरन करते हैं कि मैंने कल कौन सी फाइलें तैयार करनी हैं? बीबीयाँ अपने चूल्हें–चौंके का सिमरन करती हैं कि रसोईघर में कौन सा सामान कम है? जमींदार अपने काम का सिमरन करते हैं कि हमें कौन सी फसल बीजनी है?

हमें सिमरन करने की आदत पड़ी हुई है हम जिसे याद करते हैं उसकी शक्ल अपने आप ही हमारी आँखों के सामने आ जाती है। बच्चों को याद करते हैं तो बच्चे उसी तरह दौड़ते–फिरते नज़र आते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाए,
सुरत समानी शब्द में, ताको काल न खाए।

जब मन की जुबान से किया हुआ सिमरन पूरा हो जाता है हम अनहद शब्द को पकड़कर दूसरी तीसरी मंजिल पर पहुँचते हैं वहाँ महा अंधेरा है। जब हम सतगुरु को प्रकट कर लेते हैं; गुरु अपने प्रकाश के साथ आत्मा को ले जाता है। मैंने तुलसी साहब के रतन सागर पर कई बार सतसंग किए हैं जिसमें बताया है कि किस तरह सतगुरु अपनी आत्मा के साथ सेवक की आत्मा को मिलाकर आगे ले जाता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महासुन्न के देश में चाहे लाखों, करोड़ों सूरज चन्द्रमा निकल आएं फिर भी वहाँ अंधेरा है। पारब्रह्म में पहुँची हुई आत्मा का बारह सूरज जितना प्रकाश हो जाता है। हमारी आत्मा अनहद शब्द का कोर्स पूरा करके इससे ऊपर चली जाती है। गुरु आत्मा को मिलाकर अपने धाम ले जाता है। भँवरगुफा तक *काल* की हद है। हम *काल* की हद को अपनी ताकत से पार नहीं कर सकते। कहीं दिल में ख्याल हो कि हम इस मसले को कर्म–धर्म या पूजा–पाठ से हल कर लेंगे।

कबीर साहब कहते हैं, ''सतगुरु की दया से जब हमारा जाप पूरा हो जाता है, आँखें फड़कनी बंद हो जाती हैं। जुबान हिलनी बंद हो जाती है। आत्मा की जुबान से सिमरन शुरू हो जाता है।'' सन्त हमें अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं, उस सिमरन के पीछे उनका तप और त्याग काम करता है। हजरत बाहु कहते हैं:

जुबान न हिले होठ न फड़कन, खास नवाजी सोई हू,
जुबानी कलमा हर कोई आखे, ते दिल दा पढ़दा कोई हू।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर राम–राम कहने से राम मिलता होता तो हम सबको राम मिल जाना चाहिए था अगर शक्कर–शक्कर कहने से मुँह मीठा हो जाता तो शक्कर बनाने की क्या जरूरत थी? आपका ध्यान इस तरह पक जाना चाहिए कि गुरु अंदर प्रकट हो जाए और आपको पता भी न लगे।''

कुरम सुतन को धरतु है ऊँचे, आप उद्र को धावै।।

आप कछुए की मिसाल देकर समझा रहे हैं कि कछुआ पानी में रहता है लेकिन अपने अंडे ऊँची जगह खुष्की में देकर आता है। वह अपने बच्चों को ध्यान के जरिए पकाता है; ऐसे महात्मा कछुए की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मिसाल होते हैं। मुर्गी अंडों के ऊपर बैठकर उन्हें पकाती है ऐसे महात्मा अपने पास रहने वालों का ही फायदा कर सकते हैं; ऐसे महात्मा मुर्गी की मिसाल होते हैं। कूंज सिमरन के जरिए अपने बच्चों की परवरिश करती है, ऊँचे दर्जे के महात्मा सिमरन के जरिए अपने बच्चों की परवरिश करते हैं; ऐसे महात्मा कूंज की मिसाल होते हैं।

सन्त–महात्मा हमें प्यार से होका देते हैं कि जहाँ पूरा गुरु है वहाँ अधूरे गुरु भी है। असल की नकल सदा ही होती आई है। मैं कहा करता हूँ, ''प्यारेयो! किसी महात्मा की शरण में जाने से पहले उसकी ज़िंदगी पढें क्या उसने कभी भजन–अभ्यास किया है? दस–बीस साल खोज की है? तन मन धन की कोई कुर्बानी की है?'' ऐसा नहीं कि 'नाम' दिया और कान में फूँक मारकर कहा कि मैं तेरा गुरु हो गया हूँ। 'नाम' जिम्मेवारी है, जिम्मेवारी निभाना बहुत मुश्किल है।

निसु दिन सुरत रहै अंडन पर, पल भी ना बिसरावै।।

जब हमें 'नाम' मिल जाता है तब सोते–जागते, उठते–बैठते और सपने में बरड़ाते हुए भी गुरु का ध्यान और गुरु का सिमरन याद होना चाहिए। कबीर साहब कहते हैं:

सुपने हूं बरड़ाएके, जे मुख निकसे राम,
तांके पग की पनही, मेरे तन को चाम।

जो सपने में बरड़ाकर मालिक को याद करता है, मैं उसे अपने तन की जूतियाँ बनाकर देने के लिए तैयार हूँ। हमारे सपनों में आता है मारो पकड़ो। हम दिन–रात परेशान है। बहुत से प्रेमी कहते हैं कि हमें बुरे सपने आते हैं; सिमरन नहीं करेंगे तो बुरे सपने ही आएंगे।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

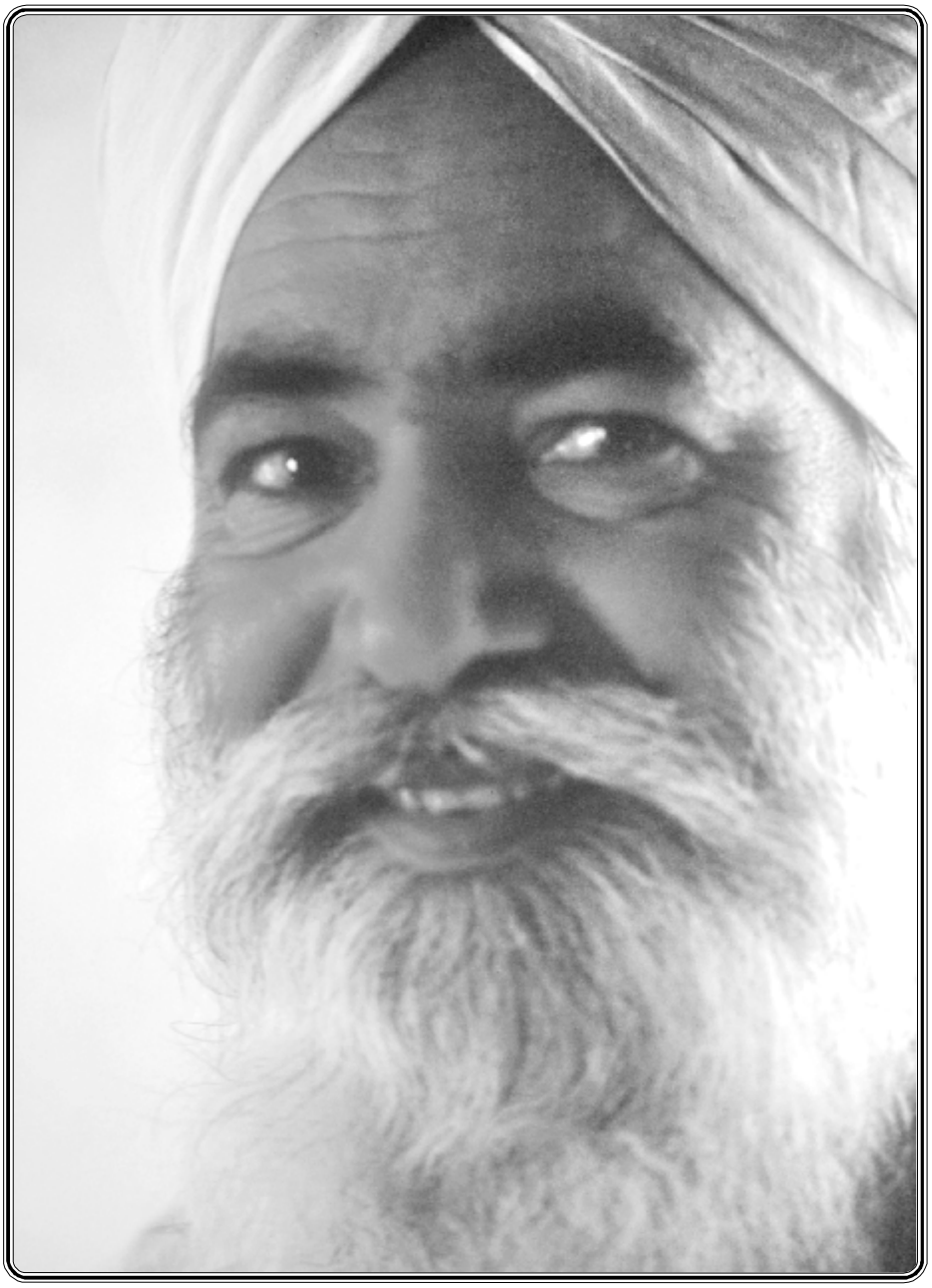

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जैसे चात्रिक रटै स्वाँति को, सलिता निकट ना आवै।।
दीन दयाल लगन हितकारी, स्वाँती जल पहुँचावै।।

आप पपीहे की मिसाल देते हैं कि पपीहा पानी की रट तो लगाता है लेकिन किसी दरिया या तालाब का पानी नहीं पीता। परमात्मा उसके दर्द को सुनकर उसके पास स्वाँति बूँद भेजता है। इसी तरह जो सेवक दुनियां के सब सहारे छोड़कर दिन–रात **परमात्मा से मिलाप** के लिए तड़पता है; परमात्मा से भी रहा नहीं जाता वह अपने प्यारे बच्चे सन्त को हमारी आत्मा की प्यास बुझाने के लिए भेजता है।

फूटि सुगंध कंज की जैसे, मधुकर के मन भावै।।
ह्वै गइ साँझि बँधि गे संपुट, ऐसी भक्ति कहावै।।

कमल का फूल पानी में रहता है। भँवरा उसका आशिक है। कमल में से महक आती है तो भँवरा कमल के फूल के अंदर चला जाता है। वहाँ जाकर इतना मस्त हो जाता है कि उसे न दिन का पता चलता है न रात का। रात होने पर कमल बंद हो जाता है, कमल में बंद होकर भँवरा दम तोड़ देता है या कोई पक्षी उसे खा जाता है। इसी तरह जिनका भजन–सिमरन, प्यार इस तरह का हो जाता है उन्हें न तो समय याद रहता है न दिन और तारीख याद रहती है। वह सोते–जागते भजन में ही लगे रहते हैं।

जैसे चकोर ससी तन निरखे, तन की सुधि बिसरावै।।
ससि तन रहत एक टक लागो, तब सीतल रस पावै।।

आप प्यार से कहते हैं, ''चकोर का चन्द्रमा के साथ इतना प्यार है कि जितनी देर चन्द्रमा शरीर में रहता है चकोर अपने शरीर की सुध

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भूल जाता है। चकोर जैसे–जैसे चन्द्रमा की तरफ ध्यान टिकाता है उसे रस आता है शान्ति आती है, वह ध्यान छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता।'' शिष्य का ऐसा ध्यान गुरु की तरफ पक जाए तो शिष्य को अंदर रस आता है शान्ति आती है।

महाराज जी लैला–मजनूं की मिसाल दिया करते थे। किसी ने मजनूं से कहा, ''तुझसे खुदा मिलना चाहता है?'' मजनूं ने कहा, ''लैला बनकर आ जाए मिल लेता हूँ।'' अगर इंसान दुनियावी प्यार में इतना मस्त हो सकता है तो हकीकी प्यार कैसे बयान किया जा सकता है?

मैंने आर्मी में सिग्नेलर का काम सीखा है। उस समय हिन्दुस्तान में वायरलैस नहीं हुआ करती थी। दिन में ऊँची जगह खड़े होकर झंडी से इशारे दिए जाते थे। रात को तेज रोशनी वाले लैम्प से इशारे दिए जाते थे जिसकी रोशनी आँखो पर पड़ती थी अगर एक बार भी आँख झपक जाए तो पता नहीं कितने ही इशारे निकल जाते; जरा भी आँख झपकने की इजाजत नहीं थी। सिग्नेलर पर सारे मुल्क की जिम्मेवारी होती है अगर किसी मुल्क का कम्युनिकेशन ढीला हो तो दूसरे मुल्क उस पर हावी हो जाते हैं।

ऐसी जुगत करै तो कोई, तब सो भगत कहावै।।

कबीर साहब कहते हैं, ''प्यारेयो! इसमें गरीब–अमीर, हिन्दु–मुसलमान, सिक्ख–ईसाई का सवाल नहीं। जो नाम लेकर यह युक्ति करता है वही भक्त कहलवा सकता है, परमात्मा का प्यारा बन सकता है। परमात्मा का प्यारा सबका प्यारा बन जाता है।''

कहै कबीर सतगुरु की मूरति, तेहि प्रभु दरस दिखावै।।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब हमारे अंदर से इस तरह का प्यार फूट–फूटकर बाहर निकलता है। हम तन–मन गुरु पर अर्पण करते हैं; दिन–रात परमात्मा को याद करते हैं तब उस परमात्मा से भी रहा नहीं जाता और वह हमें गुरु के स्वरूप में अंदर दर्शन देता है, हमारा ढाँढस बंधवाता है हमें तृप्ति देता है। जिन शिष्यों का ऐसा ध्यान पक जाता है उनका जप–तप, पूजा–पाठ सब कुछ ही हो जाता है।

जो शिष्य सोते–जागते, उठते–बैठते सिमरन में लगा हुआ है। वह जब एकाग्र होकर बैठता है उसे तन की फिक्र नहीं रहती। उसके दोनों भरवटों के दरमियान गुरु स्वरूप प्रकट हो जाता है।

मैं सतसंग में कहा करता हूँ, ''प्यारेयो! जब आँख पोंछने वाला पास न हो तो रोने में भी मजा नहीं आता।'' जब तक वह प्यारा हमारे अंदर प्रकट नहीं होता हम तब तक खुष्क रहते हैं। कई–कई दिन भजन छोड़े रखते हैं। आप एक बार उसे अपने ऊपर मेहरबान करके देखें! जब ऐसी हालत हो जाती है तो शरीर टूटने लगता है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

अमली जिए अमल खाए, त्यों हर जन जिए नाम ध्याए।

जिनका साध–संगत में प्यार लग जाता है वे लोकलाज की परवाह नहीं करते। उन्हें 'शब्द' के साथ जुड़े बिना रस नहीं आता। हमें भी चाहिए कि कबीर साहब के कहे मुताबिक 'शब्द–नाम' की कमाई करें, अपने जीवन को सफल बनाएं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

77 आर.बी. आश्रम राजस्थान

एक प्रेमी : – अगर अमेरिका से यहाँ आते हुए हमारा विमान दुर्घटनाग्रस्त हो जाए उसमें सफर करने वाले सभी लोग मर जाएं तो आत्माएं किस हालत में होंगी?

बाबा जी: – इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आत्मा किस हालत में शरीर छोड़ती है। जिस आत्मा के साथ गुरु पावर है उसे मुक्ति मिलेगी। आपको ऐसा कभी नहीं सोचना चाहिए कि जो आत्माएं दुर्घटना में शरीर छोड़ती हैं गुरु उनकी संभाल नहीं करता।

मैं आपसे कहूँगा कि आपको किसी दुर्घटना के बारे में नहीं सोचना चाहिए। आपको हमेशा गुरु के आगे प्रार्थना करनी चाहिए कि जो लोग यह पवित्र यात्रा कर रहे हैं वे गुरु की दया से सही सलामत अपने घर पहुँचे अगर दुर्घटना होती है तो सोचें! जो लोग आपके लिए दिन–रात प्रार्थना कर रहे हैं उनका क्या होगा?

प्यारेयो! अगर आप दुखी हैं या आपको कोई दिक्कत है तो मुझे भी दुख होगा। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं:

दास दुखी ते मैं दुखी।

अगर मेरे प्यारे खुश नहीं हैं तो मैं भी खुश नहीं हूँ। आपको कभी भी इस तरह की बात नहीं सोचनी चाहिए बल्कि अपने गुरु से प्रार्थना करनी चाहिए कि आप कभी ऐसी दुर्घटना में न फँसें।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हर किसी की मौत का समय और कारण पहले से ही तय होता है और इंसान उन्हीं हालातों में शरीर छोड़ता है। ऐसा जरूरी नहीं कि हम लोग विमान दुर्घटना में ही शरीर छोड़ें। कई लोग अपने घरों, गाँवों में खुशी से शरीर छोड़ते हैं। बहुत से लोग कार या ट्रेन एक्सीडेंट में भी मरते हैं क्योंकि मृत्यु का समय और कारण पहले से निश्चित है।

दूसरे विश्वयुद्ध के समय हिटलर आगे बढ़ रहा था। भारत के लोगों को ब्रिटिश आर्मी में शामिल होने के लिए भेजा जा रहा था, कोई भी आर्मी में जाना नहीं चाहता था क्योंकि सब जानते थे कि वे लड़ाई में मारे जाएंगे। मैंने अपनी इच्छा से उस लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम लिखवाया लेकिन मैं लड़ाई में मरा नहीं क्योंकि मेरी मृत्यु लड़ाईयों में नहीं लिखी थी।

सन् 1947 में जब भारत और पाकिस्तान का बँटवारा हुआ उस समय कश्मीर में लड़ाई हुई मुझे उस लड़ाई में भी लड़ना पड़ा। मैं उस लड़ाई में बम आदि चीज़ों से भी काम लेता था। मैं इस युद्ध में भी नहीं मरा क्योंकि मेरी मृत्यु लड़ाईयों में नहीं लिखी थी इसलिए मैं शान्तिपूर्वक यहाँ बैठा हूँ। ऐसा जरूरी नहीं कि हम लोग लड़ाई में मरें जिनका शान्तिपूर्वक मरना निश्चित है वे अपने घर में मरते हैं।

जब हम कोई धार्मिक यात्रा करते हैं अगर उस यात्रा में हमारी मौत हो जाती है तो उस समय दुनियावी लोग ऐसे मौके को अपने हाथ से नहीं जाने देते कहते हैं, ''उस आदमी को देखें! वह गुरु को मानता था इसलिए वह पवित्र यात्रा में मर गया।''

आर्मी में जब हमें बंदूक चलाने की ट्रेनिंग मिल रही थी उस समय हम बंदूकों को देख रहे थे जिसमें से एक बंदूक काम नहीं कर रही थी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तो हमनें उस बंदूक को एक तरफ रख दिया और दूसरी बंदूकों को चलाकर देखने लगे। शाम को सभी बंदूकों और गोलियों की गिनती की गई। आर्मी के लोग बंदूक–बारूद के मामले में बहुत सख्त होते हैं लेकिन किसी ने भी उस खराब बंदूक की तरफ ध्यान नहीं दिया जिससे गोली नहीं चलाई गई थी।

हमारे अफसर ने हमें खड़े होने के लिए कहा। हम सिग्नल भेजने वाले तीन जवान थे जिसमें से एक को वह खराब बंदूक लाकर मेरे पीछे खड़े होने के लिए कहा गया। उस जवान ने बंदूक लाकर नीचे जमीन पर रख दी। बिना टाइगर दबाए ही उस बंदूक की गोली चली जो मेरी टाँगो के बीच में से निकली और मेरे अंडरवियर को आग लग गई फिर वह गोली मेरे सामने खड़े जवान की बाजू के नीचे से निकलकर तीसरे जवान को जाकर लगी जो उसी समय मर गया।

आर्मी में बंदूकें गोला बारूद गिनने में बहुत सख्ती की जाती है। जब गोलियाँ गिनी जाती हैं तो उन्हें पता चल सकता था कि खराब बंदूक में से गोली नहीं चलाई गई तो उस बंदूक में से गोली निकाल लेनी चाहिए थी लेकिन ऐसा नहीं किया गया। जब गोली बंदूक में से निकली तो पहले मैं मर जाता क्योंकि मैं बंदूक के बिल्कुल सामने खड़ा था मेरे बचने के बाद दूसरा आदमी जो मेरे सामने खड़ा था वह मर जाता लेकिन उसकी किस्मत में भी इस तरह मरना नहीं लिखा था। जिस तीसरे आदमी को गोली लग ही नहीं सकती थी, उसे गोली लगी और वह मर गया।

काल ने हर किसी की मौत का समय और कारण निश्चित किया हुआ है। जब मौत का समय आ जाता है तो चतुराई, प्लेनिंग कुछ काम

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नहीं करती। ऐसा कोई रास्ता नहीं कि मौत को टाला जा सके। आप चाहे हालात से कितना भी भाग लें जिस तरह आपकी किस्मत में मरना लिखा है आप उसी तरह मरेंगे।

पाकिस्तान के बार्डर पर एक जगह फाजिल्का है। सन् 1971 की लड़ाई के समय वहाँ के एक आदमी ने सोचा! मैं अपने परिवार को जोधपुर में अपने किसी रिश्तेदार के पास छोड़ आऊं ये लोग वहाँ सुरक्षित रहेंगे। परमात्मा की मर्जी से ऐसा हुआ कि पाकिस्तान के जहाजों ने जोधपुर शहर पर बम गिराया और उसका परिवार मारा गया। जिसे जिस हालात में मरना है वह उसी हालात में मरेगा चाहे वह मौत को टालने के लिए कुछ भी करे।

कश्मीर की लड़ाई में जाने की मेरी बारी नहीं थी। एक आदमी ने मुझसे प्रार्थना की कि उसके बच्चे छोटे हैं और वह मौत से डरता है अगर उसकी जगह मैं लड़ाई में चला जाऊँ तो वह मेरा आभारी होगा। मैंने उस आदमी से कहा, ''मैं तेरी जगह लड़ाई में जाने के लिए तैयार हूँ।'' उस समय कमांडर इस तरह की अदला–बदली नहीं कर रहे थे। मैंने कमांडर से कहा, ''मैं मौत से नहीं डरता फिर आप मुझे क्यों रोक रहे हैं? आपको लड़ाई में जाने के लिए एक आदमी चाहिए जिसके लिए मैं तैयार हूँ।''

मैं उस लड़ाई में गया और मुझे कुछ नहीं हुआ। एक बार हमारी कंपनी को दुश्मनों ने घेर लिया उस समय मेरी पीठ पर वायरलैस सेट था एक गोली वायरलैस सेट के नीचे से निकल गई लेकिन वह गोली न वायरलैस सेट को लगी और न मुझे ही लगी। उस समय जो कुछ हुआ मैं उससे डरा नहीं मैंने अपना काम जारी रखा। जिस आदमी की

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जगह मैं लड़ाई पर गया था वह आदमी जब अपने घर गया उसे हैजे की बीमारी हुई और वह कुछ दिन बाद ही मर गया। मेरी समझ में यह आया है कि मौत के बारे में सोचना मन की कमजोरी है।

हमें अपने मन को सिमरन में लगाना चाहिए। सिमरन हमारे मन को मजबूत बनाता है हम मन से मजबूत होंगे हमारे पास मन की शक्ति होगी तो हमें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि हमारे साथ क्या होगा? हमें मौत किस तरह आएगी हम खुशी से मौत का सामना करेंगे।

कुछ महीने पहले मुम्बई से दिल्ली आने वाला एक हवाई जहाज दुर्घटना ग्रस्त हुआ जिसमें कई लोग मर गए। एक प्रेमी मेरे पास आया उसे पता था कि मैं हवाई जहाज से मुम्बई जा रहा हूँ तो उसने मुझे ट्रेन से जाने की सलाह दी। उसके एक हफ्ते बाद हमने समाचार में सुना कि एक ट्रेन दुर्घटना ग्रस्त हो गई है उसमें बहुत से लोग मर गए हैं। मैंने उस प्रेमी से पूछा कि अब मैं क्या करूँ?

मैंने उस प्रेमी से कहा कि जिन लोगों को हवाई जहाज दुर्घटना में मरना था वही लोग उस हवाई जहाज में सफर कर रहे थे। जिन लोगों को ट्रेन दुर्घटना में मरना था वही लोग उस ट्रेन में सफर कर रहे थे। जिसे जिस हालात में मरना है वह उसी हालात में मरेगा।

जब हम पहले टूर पर जा रहे थे तो पप्पू ने मुझे हवाई जहाज में सीट बाँधने और सीधा बैठने के लिए कहा। जब पप्पू मुझे यह सब बता रहा था उस समय वह खुद डरा हुआ था। मैंने पप्पू से कहा, ''तुम डरो मत। तुम्हे मेरी चिन्ता करने की जरूरत नहीं क्योंकि मैं हवाई जहाज में कई बार बैठा हूँ, आर्मी में रहते हुए पेराशूट से कूदा भी हूँ।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मैं कई बार आपको राजस्थान की यह कहानी सुनाया करता हूँ कि यहाँ का एक आदमी अरब देश में गया। उसने पहले कभी खजूर का पेड़ नहीं देखा था, वह खजूर के पेड़ पर चढ़ गया। ऊपर पहुँचकर उसने नीचे जमीन की तरफ देखा तो वह बहुत डर गया कि मैं नीचे गिरा तो मर जाऊँगा।

उसने अपने गुरु के आगे फरियाद की, ''हे गुरुदेव! मुझे बचा लें मेरी मदद करें अगर आप मुझे सही–सलामत नीचे उतार देंगे तो मैं आपके आश्रम में सौ चादरें दान दूँगा।'' गुरु को याद करते हुए उसने नीचे उतरना शुरू कर दिया। जब वह आधा नीचे उतर आया उसने देखा कि फासला कम रह गया है तो उसने सोचा कि सौ चादरें दान करने की क्या जरूरत है पचास चादरें ही बहुत हैं। इस तरह वह जैसे–जैसे नीचे उतरता गया चादरों की गिनती कम करता गया।

जब वह सही–सलामत नीचे उतर आया और बाजार में चादरें खरीदने गया तो उसने सोचा बीस–तीस चादरें लेने की क्या जरूरत है मैंने देखा है कि वहाँ आश्रम में बहुत चादरें हैं आखिर उसने एक चादर खरीद ली और अपने गुरु के पास गया। उसने गुरु को बताया कि उसके साथ क्या हुआ कैसे गुरु ने उसकी मदद की और गुरु से कहा कि मैं आपके लिए यह चादर लाया हूँ।

उसके गुरु ने कहा, ''तुम यह चादर अपने बच्चों के लिए घर ले जाओ।'' उस आदमी ने कहा कि गुरु जी आप यह चादर ले लें क्योंकि मैंने आपको सौ चादरें दान देने की बात सोची थी लेकिन मैं एक ही चादर लेकर आपके पास आया हूँ अगर आप इसे स्वीकार नहीं करेंगे तो मैं नहीं जानता मेरा मन क्या करेगा?

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उस प्रेमी को खजूर के पेड़ पर चढ़कर गुरु को याद करने का मौका मिला उसी तरह आप लोग हवाई जहाजों में बहुत घूमते हैं और आपको बहुत मौके मिलते हैं जब आप नीचे देखें और आपको लगे कि आपका जहाज दुर्घटना ग्रस्त होने वाला है तब आप ऐसी भेंट के बारे में सोचने की बजाय सिमरन करना शुरू करें। सिमरन आपको इतनी ताकत देगा कि आप कभी भी मौत से नहीं घबराएंगे।

एक प्रेमी :– आपके साथ यह अनमोल समय बहुत कम लगता है। क्या कभी ऐसा समय आएगा जब हम आपके साथ दो हफ्ते से ज्यादा समय बिता सकेंगे?

बाबा जी :– बहुत सोचने के बाद आपको यह समय दिया गया है। आपको यहाँ जो समय मिला है आप इस समय से फायदा उठाएं।

एक प्रेमी :– मेरा सवाल दुनियां के बारे में है। मैं आपको ज्यादा परेशान नहीं करूंगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि सतगुरु इस दुनियां की ज्यादा परवाह नहीं करते। हमें लगता है कि हम अंधेरे युग में हैं और सब तरफ से भविष्यवाणियां हो रही हैं अगर बाईबल और ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों को पढ़ें तो उससे पता नहीं चलेगा क्योंकि सब एक दूसरे के विपरीत लिख रहे हैं।

ग्रुप लीडर मिली और नीना ने भी हमें चेतावानी दी है कि समय कम है। कुछ लोग कहते हैं कि मन इतना मजबूत होता जाएगा कि जो लोग अभी तक ज्योति के साथ नही जुड़े हैं वे जुड़ भी नहीं पाएंगे। बाईबल की भविष्यवाणी ने ईसा मसीह के दुश्मन की ऊँचाई बताई है जोकि बहुत डरा देने वाली है। एक आदमी का कहना है कि हमें पहाड़ों

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

में जाकर परमात्मा के आगे प्रार्थना करनी चाहिए कि परमात्मा आने वाले विनाश को टाल दे। मैं जानता हूँ कि सतसंगी को ऐसी बातों में नहीं पड़ना चाहिए, अपना भजन–सिमरन जारी रखना चाहिए आप हमें राय दें कि हम इन सबसे कैसे निपटें?

बाबा जी :– मैं आपको प्यार से सलाह देना चाहता हूँ कि जब हम मन से कमजोर होते हैं तभी इन चीज़ों के बारे सोचते हैं। बारह–तेरह साल पहले हिन्दुस्तान के कुछ ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की थी कि धरती पर बहुत जल्दी आठों ग्रह एक ही समय पर आएंगे और बहुत विनाश होगा जिसमें कोई नहीं बचेगा।

उस समय लोगों को चेतावनी दी गई कि अपने घर की छत के नीचे न सोयें, खुले मैदान में टैन्ट के घर बनाकर रहे। उस समय बहुत से लोगों ने टैन्ट बनाने का व्यापार शुरू कर दिया क्योंकि सभी लोग टैन्ट में रहना चाहते थे। उस समय लोग डरे हुए थे कि वे विनाश में मर जाएंगे। अब तक न तो आठों ग्रह एक ही समय में आए न कोई विनाश हुआ और भी बहुत सी भविष्यवाणियां की गई थी जिसमें से कोई भी सच साबित नहीं हुई।

मैंने आपको पहले भी बताया है कि आपको ऐसी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। जिन्हें आज मरना है वे आज ही मरेंगे जिन्हें नहीं मरना चाहे कितना बड़ा विनाश क्यों न हो जाए वे नहीं मरेंगे। जो लोग भविष्यवाणियों पर भरोसा करके अपने घर छोड़कर टैन्टों में सोये जिन्हें मरना था वे टैन्टों में भी मर गए। जिस दिन धरती पर विनाश की भविष्यवाणी हुई थी उस दिन मैं अपने घर में सोया हुआ था लेकिन मेरे साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ, इस समय मैं आपके सामने बैठा हूँ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्यारेयो! क्या आपको इस बात का भरोसा है कि आप दस, बीस या तीस साल तक जिएंगे? आप एक साँस का भी भरोसा नहीं कर सकते तो आप इन सब बातों को लेकर क्यों परेशान हो रहे हैं? जिन्हें मरना है वे मरेंगे जिन्हें नहीं मरना वे नहीं मरेंगे।

लोगों ने बहुत सी भविष्यवाणियां की थी जो सच साबित नहीं हुई वे आगे भी भविष्यवाणियां करते रहेंगे। लोग जन्म लेंगे और मरेंगे। समयानुसार सब होता रहेगा। जहाँ तक लड़ाईयों का सवाल है दुनियां में लोग एक–दूसरे से लड़ते ही रहते हैं और लड़ाईयां चलती रहेंगी।

सन्त कभी भविष्यवाणियों में विश्वास नहीं करते और न ही अपने सेवकों को डराते हैं कि ऐसा हो जाएगा वैसा हो जाएगा! सन्त हमें 'नाम' का सिमरन करने के लिए कहते हैं। ईसा मसीह, गुरु नानकदेव, गुरु अर्जुनदेव और हमारे गुरु कृपाल का यह मिशन नहीं था कि वे दुनियां को खुशहाल बना देंगे। उनका मिशन केवल तड़पती हुई आत्माओं को दुखी दुनियां से ले जाकर परम पिता परमात्मा के पास पहुँचाना है।

ज्यादातर लोगों ने गुरुओं को नहीं पहचाना अगर लोगों ने उन्हें पहचाना होता तो यीशु को सूली पर न चढ़ाते; गुरु नानकदेव जी को कुराहिया न कहते; गुरु अर्जुनदेव जी को गरम तवे पर न बिठाते।

सन्त तड़पती आत्माओं को इस दुखी दुनियां से आजाद करवाने के लिए आते हैं, वे इस दुनियां को खुशी की दुनियां बनाने के लिए नहीं आते इसलिए वे इस तरह की भविष्यवाणियां नहीं करते।

एक प्रेमी :– मेरी पत्नी कहती है कि आपके साथ यह दस दिन के प्रोग्राम का समय बहुत कम लगता है। मैंने और लोगों से यह भी सुना

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

है कि आप महाराज कृपाल से ज्यादा सख्त हैं। मैं यह समझता हूँ कि इस जगह आपके साथ दस दिन रहना बहुत बड़ी दया है?

बाबा जी :– अगर मैं आपकी भाषा जानता होता तो आपके साथ बहुत सख्त होता लेकिन मैं आपकी भाषा नहीं जानता इसलिए मैं हमेशा आपको आँखों से ही बहुत प्यार देने की कोशिश करता हूँ। मेरे पास आपको प्यार देने के लिए केवल आँखें हैं। जब 'शब्द' आत्मा से मिलता है तो किसी भाषा की जरूरत नहीं होती क्योंकि यहाँ प्यार की भाषा का ही इस्तेमाल किया जाता है और प्यार आँखों से ही दिया जाता है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com